International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 01-09

शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. श्रीमती राखी गिरीराज धिंग्रा

Ph.D. student, Department of Education, University of Mumbai, Maharasthra, India.

प्रस्तावना

अनुसन्धानकर्ता ने शांति शिक्षा के प्रति मुंबई विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले शिक्षण शाखा, अभियांत्रिक शाखा, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा इन महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और दृष्टिकोण की जॉच करने हेतु इस विषय का अध्ययन किया है। स्वयंनिर्मित साधन में शांति शिक्षा के चार पहलुओं को अधिक महत्व दिया गया हैः संघर्ष समाधान, अहिंसा, मानव अधिकार और राष्ट्रीय एकात्मकता। निष्कर्ष द्वारा पता चलता है कि विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की शांति के प्रति जागरूकता में कमी पाई गयी है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में से स्त्री अध्यापिकायें शांति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है और स्त्री अध्यापिकाओं का शांति शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है। । अध्यापन अनुभव के अनुसार 10 साल से अधिक अध्यापन अनुभव प्राप्त अध्यापक शांति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है उसी प्रकार 10 साल से कम अध्यापन अनुभव प्राप्त अध्यापकों का शांति शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है।

पृष्ठभूमि तथा तर्काधार

शांति शिक्षा से तात्पर्य है ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति में मानवीयता दया, प्रेम, स्नेह, सहयोग, सदभाव, सामंजस्य, अभय, नैतिकता और अहिंसा की भावना जागृत कर सके और उसकी व्यवहार मे परिणति हो सके। शांति शिक्षा एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा हम समाज मे विद्यमान समस्त द्वंद्वों को समाप्त कर सकते है। शांति शिक्षा तब तक सफल नही हो सकती जब तक व्यैक्तिक, राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर सार्थक और दृढ प्रयास न किये जाये। साथ ही विश्व शांति स्थापित करने के लिए सिर्फ मन की शांति या सामाजिक शांति मे से किसी एक स्तर पर प्रयास न करके दोनों स्तरों पर प्रयास अपेक्षित है।

शांति जीवन की प्रत्येक अवस्था में संभव है ये प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वो अपने भाग्य की सही दिशा चुनता है या किसी युध्द के भय को सहन करता है। आज मानव जाति भय के वातावरण में अपना जीवनयापन कर रही है, जिस कारण ही आज शिक्षा क्षेत्र में नवीनीकरण की अति आवश्यकता है। जिसके अंतर्गत शांति शिक्षा को लाना होगा। शांति शिक्षा में बालक को शांति से जीवनयापन करने की कला से अवगत कराया जा सकता है । इससे उसमें अतिरिक्त शांति धारणाओं, सकारात्मक सोच, शांति मूल्यों और व्यावहारिक कौशल की उत्पत्ती होगी और समस्त नकारात्मक प्रभावों का अंत होगा। शांति शिक्षा के लिये सकारात्मक सोच का होना एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है।

शांति शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा के द्वारा शांतमय जीवन जीने वाले व्यक्ति का निर्माण करना है। अपनी संस्कृति सामाजिक जीवन का संपूर्ण अध्ययन विविधता मे एकता और अपने जीवन मे आयी हुई समस्याओं को हल करने की कला ही शांति शिक्षा है। शांति शिक्षा यह स्वयं मे बदलाव और आत्मजागरूकता के निर्माण के लिए अति आवश्यक है। शांति शिक्षा यह अहिंसा, प्रेम, दया विश्वास, ईमानदारी, सहकार्य इन तत्वों पर आधारित है।

आधुनिक दौर में प्रगति की चाह में बालक घर एवं विद्यालय में बेहतर आधुनिक शिक्षा तो प्राप्त कर रहा है किंतु वह स्वयं को समाज में मानसीक रूप से असहज महसुस कर रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप उसके व्यवहार में हिंसात्मक प्रवृत्ती परिलक्षित होती है। जो समाज व देश में अस्थिरता लाने का कार्य करती है। समाज व देश में हिंसा कई रूपों मे दिखाई देती है। यह शारीरिक हिंसा, मानसिक हिंसा एवं वैचारिक हिंसा के रूपमें विद्यमान है। हिंसा का भाव हिंसा से कई अधिक नुकसान–देह होता है। जो मानव के विकास में बाधा का कार्य करता है। युनिसेफ के अनुसार शांति द्वारा बालक को दिशा मिलेगी। इससे बालक अपने जीवन में मुक्त तथा सभी मनुष्यों मे मित्रता की भावना की समझ होगी। यूनिसेफ के अनुसार शांति शिक्षा ज्ञान, कौशल, मुद्रा तथा सभी मुल्यों को विकसित करने की प्रकिया है। इसमे माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन आता है, जो बालक युवा तथा वयस्कों को संघषों, युध्दों को, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बचाता है। शांति शिक्षा के माध्यम से संघर्षों को सुलझाया जा सकता है तथा दोनों व्यक्तियों के मध्य, व्यक्ति के अंदर, समूह के अंदर, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, शांति में मददगार स्थितियों का निर्माण किया जा सकता है।

सामान्यतः युध्द, हिंसा व अत्याचार की अनुपस्थिती को ही शांति मान लिया जाता है किंतु ऐसा नही है क्योंकि यह आवश्यक नही की जहॉ हिंसा व युध्द ना हो, वहॉ के व्यक्तियों मे प्रेम, सौहार्द, सदभावना, मित्रता के गुण पाये जाते हो। मानव अपने जीवन मे संघर्ष करता है, कामयाब बनता है, धन एकत्रित करता है, भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने का प्रयास करता है किंतु इन सब को पा लेने के बाद भी उस के जीवन मे शांति नही है, तो सभी सुख सुविधाएँ उसे व्यर्थ लगती है । इसलिये इसका प्राप्त करने के साधन पर भी विचार करना होगा।

युनिसेफ के अनुसार "शांति शिक्षा ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ती तथा मुल्यों को विकसित करने की प्रकिया है। इसके माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन आता है जो बालक, युवा तथा वयस्कों को संघर्षो, युध्दों को, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बचाता है। शांति शिक्षा के माध्यम से संघर्षो को सुलझाया जा सकता है । तथा दो व्यक्तियों के मध्य, व्यक्ति के अंदर, समुह के अंदर, राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय स्तर पर शांति में मददगार स्थितियों का निर्माण किया जा सकता है।"

भयाकांत विश्व में विकासशील ही नही विकसित और सक्षम देश भी आतंकित और अशांत है। परस्पर भौगोलिक, आर्थिक, बौध्दिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक वर्चस्व और आधिपत्य की लालसा ने तमाम देशों को क्रुर और हिंसक बनाने में कोई कसर नही छोडी है। लाभ हानि के गणित एवं प्रथम स्थान की प्रतिस्पर्धा में आज मानव जाति मानवियता से दूर होती जा रही है। यदि इसमें इसी प्रकार निरन्तरता बनी रही तो जल्दी ही मानवीयता की परिभाषा ही बदल जाएगी जो संभवतः हमें पशुता की ओर ले जा सकती है। मानव को महत्तम बनाए रखने के लिए हमें विश्वस्तरीय प्रयास करने होंगे। जिस प्रकार पर्यावरण की सुरक्षा के लिए "पर्यावरण शिक्षा" को पूरे विश्व में अनिवार्य घोषित किया है, उसी प्रकार अब वह समय आ गया है जब मानव जाति व मानवाधिकारों की सुरक्षा

के लिए संपूर्ण विश्व में "शांति शिक्षा व उससे संबंधित क्रियाओं व कार्यक्रमों को किसी न किसी रूप से अनिवार्य घोषित किया जाए।"

आज की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है कि मानव का सर्वांगिण विकास संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक करना क्योंकि आज विश्व एक वैश्विक गॉव सा बन गया है। उसकी मॉगों को पूरा करने के लिए मानव का बहुपक्षीय विकास होना आवश्यक है। लेकिन वैश्वीकरण के साथ ही चहुँ ओर प्रतिस्पर्धा का वातावरण भी अत्यंत तीव्र गति से बढ रहा है। जिससे समस्त मानव मनों में अशांति फैल गई है। जिसका प्रमुख कारण द्वव्द, तनाव, अवसाद की स्थितियॉ, चारो तरफ प्रतिस्पर्धा की भावना, कदम कदम पर चुनौती भरी जिन्दगी, हर व्यक्ति को पहले पाने की आतुरता, प्रतिदिन एक नई समस्या, नए दौर में मशीनीकृत जिन्दगी का सफर, समय का सुईयों की रफ्तारसे चलना व उससे भी अधिक रफ्तार चारों ओर है, जो तनावपूर्ण परिस्थितियों को उत्पन्न कर अशांति फैला रही है।

आज विद्यालयों में आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि जैसे नकारात्मक प्रेषण पाठ पाठयक्रम में जोडे गए है व इस पर प्रायः निबंध लिखने को भी कह दिया जाता है। बी.एड. प्रशिक्षणार्थि यों को भी इन प्रकरणों पर पाठ प्रस्तुत करने होते है । वहॉ कोई भी उन्हें उस प्रकरण के अन्य तरीके से प्रस्तुतीकरण के बारे मे सचेत नही करता है, बल्कि सुझाता भी नही है। उदा. "बेराजगारी की समस्या" प्रकरण नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करता है इस प्रकरण को यदि "रोजगार के उपाय" के नाम से पढाया जाए तो अधिक प्रभावी बन पडेगा। "आतंकवाद के प्रभाव" की बजाय "विश्व शांति का महत्व" और "बेईमानी के परिणाम" की अपेक्षा "ईमानदारी के लाभ" बताये जाने चाहिए।

प्रो.मोनिशा बजाज (University of Columbia, US) के अनुसार "शांति शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसमे जनसामान्य को सुरक्षा व सम्मान के साथ जीने की आवश्यकता है इस हेतु हमें विश्वविद्यालय, विद्यालय व परिवारिक स्तर पर शांति शिक्षा उपलब्ध करानी होगी।"

इसी कारण से अनुसन्धानकर्ता ने इस विषय पर अनुसन्धान करने का निश्चय किया है।

अनुसन्धान से संबंधित साहित्य की समीक्षा

संबंधित साहित्य की समीक्षा करते समय अनुसन्धानकर्ता ने अनेक अनुसन्धान कार्यों, किताबों, शिक्षा से संबंधित लेख, कम्पुटर के द्वारा जानकारी प्राप्त की है। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस विषय से संबंधित ऐसे सभी साहित्यों का विचार किया गया है।

राठोड 2006 " क्या स्कुली पाठयक्रम मे दंगो की घटनाएॅ शामिल की जाएॅ " प्रस्तुत लेख मे नई पीढी को देश की तात्कालिन समाज को अच्छी तरह से समझने की आवश्यकता है। उन्हें हर छोटी बडी घटनाओं की जानकारी होना अति– आवश्यक हो गया है। हमारे जीवन मे इतिहास की भूमिका सिर्फ भूतकाल मे घटित घटनाओं की जानकारी देना नही है बल्कि अच्छी व बुरी दोनों बातों को पहचान कर मानव मूल्यों को विकसित करने हेतु प्रेरणा भी देता है। इसीलिए एन.सी.ई.आर.टी. जैसी अनुभवी और व्यावसायिक संस्था ने बाबरी मस्जिद विध्वंस, गुजरात के दंगे व इस तरह की घटनायें जो समाज का एक कटु सत्य है, इसको समझाने का प्रयत्न किया है कारण इतिहास अपनी पुनरावृत्ति करता है। इसलिए ऐसी घटनाओं के दुष्टपरिणामों को भावी पीढी से अवगत करना उसका प्रयत्न है।

बालिया 2006 "सरकारी एंव निजी विद्यालयों के शिक्षकों मे शांति शिक्षा के प्रति अभिवृत्ती का अध्ययन" प्रस्तुत अनुसन्धान मे सरकारी व निजी विद्यालयोंके कुल 120 शिक्षकों का समावेश किया गया है। प्रस्तुत अनुसन्धान मे स्वनिर्मीत उपकरण "शांति शिक्षा" के प्रति अभिवृत्ती मापनी का उपयोग किया गया है। जब सम्पुर्ण रूप से सरकारी व निजी विद्यालयों के शांति शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसके निष्कर्ष इस प्रकार से हैः निजी विद्यालयों के शिक्षकों का सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना मे शांति शिक्षा के प्रति अभिवृत्ती में अंतर आया है । निजी विद्यालयों के शिक्षकों मे सकारात्मक अभिवृत्ति सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना मे अधि सकारात्मक है।

जुनेजा 2011"सामाजिक अध्ययन के माध्यम से शांति शिक्षा प्रभावपूर्ण सहसम्बन्ध के दृष्टिकोण से "प्रस्तुत अनुसन्धान के द्वारा इनका कहना है कि शांति के संदर्भ मे सामाजिक अध्ययन प्रभावशाली आधारस्तंभ का निर्माण करता है। सामाजिक अध्ययन समाज और समाज से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों की जानकारी प्रदान करता है। सामाजिक अध्ययन के माध्यम से जीन महत्वपूर्ण बिंदुओं, तथ्यों, मुद्दों, समस्याओं, आवश्यकताओं आदि पर विचार, विमश तथा चर्चा की जाती है। उनके अभाव में शांति की स्थापना की कल्पना भी नही की जा सकती है। शिक्षक, शिक्षा संस्थान तथा शांति शिक्षा के मध्य अन्योन्याश्रित सम्बन्ध विद्यमान है। शिक्षक, शिक्षा संस्थानों के माध्यम से सामाजिक अध्ययन शिक्षा की विधियों प्रविधियों, रणनीतियों एवं प्रतिमानों मे परिवर्तन किया जाए, ताकि शांति शिक्षा को वास्तविकता के धरातल पर लागु किया जाए। अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक अध्ययन के माध्यम से शांति शिक्षा का प्रयास निश्चित ही प्रभावपूर्ण सहसम्बन्ध को स्पष्ट करता है।

सारडा 2011 "शिक्षकों मे शांति शिक्षा हेतु जागरूकता एक अध्ययन" प्रस्तुत शोध पत्र में अनुसन्धानकर्ता ने शिक्षकों में शांति हेतु जागरूकता का अध्ययन किया गया है सारांशतः पुर्वसेवारत शिक्षकों पर शांति जागरूकता पर किये गये शोध से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैः पुर्व सेवारत व सेवारत शिक्षकों मे शांति जागरूकता के प्रति समानता है। पुर्व सेवारत व सेवारत पुरूष शिक्षकों मे भी शांति जागरूकता के प्रति समानता पायी गयी है। सेवारत महिला शिक्षकों मे शांति जागरूकता अधिक है।

शांति शिक्षा के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति पर आधारित कई अनुसन्धान हुए है। जिसमें शांति के लिए शांति शिक्षा शिक्षा के प्रति जागरूकता और शांति शिक्षा के प्रति अभिवृत्ती पर आधारित अलग अलुग कई अनुसन्धान है। परंतु जागरूकता और अभिवृत्ती इन दोनों को एक साथ लेकर हुए अनुसंधान बहुत ही कम है। साथ ही इनके सहसंबंध पर आधारित काफी अनुसंधान है पर तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित एक भी अनुसन्धान प्राप्त नही हुए है । स्कूल स्तर के शिक्षकों पर आधारित कई अनुसन्धान है परंतु महाविद्यालय स्तर पर आधारित एक भी अनुसन्धान अभी तक प्राप्त नही हुए है तथा शिक्षा शास्त्र से संबंधित कई अनुसन्धान है परंतु सामाजिक विज्ञान अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा विज्ञान पर आधारित एक भी अनुसन्धार अभी तक प्राप्त नही हुऐ है। इस अनुसन्धान की सबसे बडी विशेषता यह है कि अभी तक जागरूकता अभिवृत्ति संघर्ष समाधान अहिंसा मानव अधिकार राष्ट्रीय एकात्मकता पर अलग अलग कई अनुसन्धान है परंतु इन सब को एक साथ लेकर हुए अनुसन्धान अभी तक प्राप्त नही हुए है।

उपरोक्त सभी बातों का निरीक्षण करने पर प्रस्तुत अनुसन्धान की विविधता अर्थात अलगपन यह है कि अभी तक इस विषय से संबंधित अनुसन्धान नही हुएॅ है। स्कुल विद्यालयों तथा महाविद्यालयों स्तर पर शांति शिक्षा से संबंधित कई अनुसन्धान हुए है। परंतु विविध महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन इस पर आधारित एक भी अनुसन्धान अभी तक प्राप्त न होने के कारण यह विषय दुसरे विषयों से जरा हटकर है और यहीं इस की विशेषता भी है। इसी कारण से अनुसन्धानकर्ता ने इस विषय पर अनुसन्धान करने का निश्चय किया है।

अनुसन्धान अध्ययन की आवश्यकता

यूनिसेफ के अनुसार शांति शिक्षा ज्ञान, कौशल, मुद्रा तथा मुल्यों को विकसित करने की प्रक्रिया है। इसके माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन आता है। जो बालक, युवा तथा वयस्कों को संघषों, युध्दों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बचाता है। शांति शिक्षा के माध्यम से संघर्षो को सुलझाया सकता है। तथा दो व्यक्तियों के मध्य, व्यक्ति के अंदर, समूह के अंदर राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति में मददगार स्थितियों का निर्माण किया जा सकता है।

युनेस्को की धारणा है कि शिक्षा द्वारा ही विश्व शांति की स्थापना की जा सकती है। युनेस्को के संविधान की प्रस्तावना मे लिखा है कि, "युध्दों का जन्म व्यक्ति मे मस्तिष्क में होता है। अतः युध्द से बचने के लिए व्यक्ति के मस्तिष्क मे शांति की आधारशीला रखनी चाहिए। इस कार्य को अध्यापक ही सफल तरीकों से कर सकता है क्योकि शिक्षा द्वारा ही विद्यार्थियों को विश्व मे होने वाले परिवर्तनो एवं घटनाओं से अवगत करारकर इस बात का आभास दिलाया जा सकता है कि शांति शिक्षा कितनी महत्वपुर्ण है।"

आज के मानव का मस्तिष्क अशांत है और वह इतना अशांत है कि शांति के लिए उसे प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है और वह प्रशिक्षण कार्य शांति शिक्षा से ही संभव हो सकता है। इस कार्य का उत्तरदायित्व समाज के लघुरूप "विद्यालयों" को सौपा गया है। विद्यार्थियों मे शांति शिक्षा का महत्व इसकी आवश्यकता व उसके प्रति जागरूकता को विकसित करने का कार्य अध्यापकों को दिया गया है। अध्यापक का व्यक्तित्व आदर्श एवं अनुकरणीय माना गया है। यदि किसी भी स्तर पर कोई परिवर्तन करना है तो शिक्षक के द्वारा सहज रूप से किया जा सकता है। अध्यापक के सोचने एवं व्यवहार के शांतिपूर्ण तरीकों को प्रदर्शित कर एक सकारात्मक आदर्श स्थापित करना होगा। यह सब तभी संभव है जब शांति शिक्षा के प्रति अध्यापकों को जागरूक किया जायेगा।

उपरोक्त बातों को ध्यान मे रखते हुए अनुसन्धानकर्ता ने शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा शाखा, अभियांत्रिक शाखा, सामाजिक विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान शाखा इन महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और दृष्टिकोण का अध्ययन करने का निश्चय किया है।

अनुसन्धान का उद्देश्य

1. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर का मापन निम्नलिखित चरों के अनुसार करना।
   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव
2. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर के मापन का तुलनात्मक अध्ययन निम्नलिखित चरों के अनुसार करना।
   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव
3. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण का मापन निम्नलिखित चरों के अनुसार करना।
   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव
4. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण के मापन का तुलनात्मक अध्ययन निम्नलिखीत चरों के अनुसार करना।
   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव

अनुसन्धान की शून्य परिकल्पना

1. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों की जागरूकता के स्तर में निम्नलिखित चरों के अनुसार कोई सार्थक अंतर नही होता है ।
   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव
2. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों की दृष्टिकोण में निम्नलिखित चरों के अनुसार कोई सार्थक अंतर नही होता है।
   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव

शोध प्रविधियां

1. शोध विधि तंत्र

प्रस्तुत अनुसन्धान यह वर्तमान समय से संबंधित है। जिस कारण प्रस्तुत अनुसन्धान मे वर्णनात्मक अनुसन्धान पध्दती का उपयोग किया है। उसी प्रकार वर्णनात्मक अनुसन्धान पध्दती की तुलनात्मक अनुसन्धान पध्दती का उपयोग प्रस्तुत अनुसन्धान मे अनुसन्धान पध्दती के रूप मे किया गया है।

2. समष्टि (पापुलेशन) तथा न्यादर्श

प्रस्तुत अनुसन्धान मुंबई अंतर्गत आनेवाले सामाजिक, चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी तथा शिक्षा शाखा चुनाव हेतु सम्भाव्य न्यादर्श की साधारण अनियमित न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। इसमे मुंबई अंतर्गत आनेवाले सामाजिक, चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी तथा शिक्षा शास्त्र महाविद्यालयों के कुल 547 अध्यापकों का चुनाव न्यादर्श के रूप मे किया जायेगा। जियमें सामाजिक विज्ञान शाखा के 124, चिकित्सा विज्ञान शाखा के 172, अभियांत्रिक शाखा के 132 तथा शिक्षणशास्त्र शाखा के 119 अध्यापकों का समावेश न्यादर्श के रूप में किया गया है।

3. उपकरण तथा तकनीकें

प्रस्तुत अनुसन्धान मे स्वयंनिर्मित साधन का उपयोग किया गया है। 1 शांति शिक्षा के प्रति अध्यापको की जागरूकता जिसमें कुल विधान 51 है जिसमें संघर्ष समाधान के 20, अहिंसा के 13, मानव अधिकार के 7 तथा राष्ट्रीय एकात्मकता के 11 कथनों का समावेश किया गया है। स्वयंनिर्मित साधन की विश्वसनीयता 0.85 तथा 5 अंकी पदनिश्चय श्रेणी का प्रयोग किया गया है । जिसमें सकारात्मक कथन को 5 4 3 2 1 तथा नकारात्मक कथनों को 1 2 3 4 5 ऐसे अंक दिये गये है। 2 शांति शिक्षा के प्रति अध्यापको का दृष्टिकोण जिसमें कुल 60 कथन है जिसे जिसमें संघर्ष समाधान के 19 कथन अहिंसा के 12 कथन मानव अधिकार 16 कथन तथा राष्ट्रीय एकात्मकता के कथनों 13 का समावेश किया गया है। स्वयंनिर्मित साधान की विश्वसनीयता 0.83। 5 अंकी पदनिश्यय श्रेणी का प्रयोग किया गया है जिसमें सकारात्मक कथन को 5 4 3 2 1 तथा नकारात्मक कथनों को 1 2 3 4 5 ऐसे अंक दिये गये है।

4. प्रदत्त संचयन तथा विश्लेषण की प्रविधि

प्रस्तुत अनुसन्धान मे तथ्यों का विश्लेषण दो प्रकार से किया गया है।

1. वर्णनात्मकः
   अ. केन्द्रवर्ती मान
   ब. विचलन मान
2. अनुमानात्मक
   अ. टी टेस्ट
   ब. चरिता

प्रदत्त विश्लेषण

शून्य परीकल्पना 1 का परीक्षण

1. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में निम्नलिखित चरों के अनुसार कोई सार्थक अंतर नही होता है।

   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव

उपरोक्त परिकल्पना का परीक्षण निम्न प्रकार से किया गया है व इस परिकल्पना को 1.अ 1.ब 1.क 1.ड 1.च. 1.छ 1.ज में विभाजित किया गया है।

शून्य परिकल्पना 1. अ का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में संघर्ष समाधान इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नही होता है।

सारिणी कमांक 1: संघर्ष समाधान इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता

संघर्ष समाधान	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	767.84	सार्थक अंतर है
मध्यमान	38.41	32.73	73.39	35.87	1.96	2.58	3.77	2.91	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	9.36	7.46	7.93	7.04								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार संघर्ष समाधान इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापक अधिक जागरूक है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 767.84 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः शांति शिक्षा के प्रति संघर्ष समाधान इस चर में सार्थक अंतर होता है।

शून्य परिकल्पना 1. ब का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में अहिंसा इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 2: अहिंसा इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता

अहिंसा	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	359.6	सार्थक अंतर है
मध्यमान	26.96	23.40	44.61	27.43	1.96	2.58	2.91	2.24	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	6.61	5.37	6.42	4.89								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार अहिंसा इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापक अधिक जागरूक है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है । उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 359.6 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः शांति शिक्षा के प्रति अहिंसा इस चर में सार्थक अंतर होता है।

शून्य परिकल्पना 1. क का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में मानव अधिकार इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है ।

सारिणी क्रमांक 3: मानव अधिकार इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता

मानव अधिकार	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	489.32	सार्थक अंतर है
मध्यमान	34.25	28.92	60.70	33.44	1.96	2.58	3.95	2.71	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	9.78	6.90	6.76	6.59								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार मानव अधिकार इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापक अधिक जागरूक है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 489.32 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्ष: शांति शिक्षा के प्रति मानव अधिकार इस चर में सार्थक अंतर होता है।

शून्य परिकल्पना 1. ड का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में राष्ट्रीय एकात्मकता इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी क्रमांक 4: राष्ट्रीय एकात्मकता इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता

राष्ट्रीय एकात्मकता	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	543.9	सार्थक अंतर है
मध्यमान	26.85	22.85	50.58	26.45	1.96	2.58	3.46	2.84	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	7.85	6.79	5.99	6.90								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार राष्ट्रीय एकात्मता इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापक अधिक जागरूक है । स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है । उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 543.9 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्ष: शांति शिक्षा के प्रति राष्ट्रीय एकात्मकता इस चर में सार्थक अंतर होता है ।

शून्य परिकल्पना 1. च का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में कुल अर्थात सभी इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी क्रमांक 5: कुल अर्थात सभी इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता

कुल अर्थात सभी	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	800.8	सार्थक अंतर है
मध्यमान	126.47	107.90	229.28	123.19	1.96	2.58	3.75	2.84	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	29.24	20.34	22.13	18.62								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार कुल अर्थात सभी चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापक अधिक जागरूक है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है । उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 800.8 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्ष: शांति शिक्षा के प्रति कुल अर्थात सभी इस चर में सार्थक अंतर होता है ।

शून्य परिकल्पना 1. छ का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में लिंगभेद इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 6: लिंग भेद के अनुसार महाविद्यालयों के अध्यापकों की षांति षिक्षा के प्रति जागरूकता

लिंग	नमुना	मध्यमान	प्रा.विचलन	स्वा. मात्रा	सारिणी मूल्य		टी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
स्त्री	318	120.81	49.26	547	0.05	0.01	3.91	0.01	अस्वीकार
पुरूष	229	111.93	37.35		1.96	2.58			

सारिणी अनुसार प्राप्त 'टी' की कींमत 3.91 है। जो कि सारणी मूल्य से अधिक है। अतः सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः लिंग भेद के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर है।

शून्य परिकल्पना 1. ज का परीक्षण
शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में अध्यापन अनुभव इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 7: अध्यापन अनुभव के अनुसार महाविद्यालयों के अध्यापकों की षांति षिक्षा के प्रति जागरूकता

अध्यापन अनुभव	न्यादर्श	मध्यमान	प्रा.विचलन	स्वा. मात्रा	सारिणी मूल्य		टी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
10 साल से कम	413	138.36	49.23	547	0.05	0.01	2.84	0.01	अस्वीकार
10 साल से अधिक	134	154.07	57.57		1.96	2.58			

सारिणी अनुसार प्राप्त 'टी' की कींमत 2.84 है। जो कि सारणी मूल्य से अधिक है। अतः सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः अध्यापन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर है।

शून्य परीकल्पना 2 का परीक्षण

2. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की दृष्टिकोण के स्तर में निम्नलिखित चरों के अनुसार कोई सार्थक अंतर नही होता है।
   1. विभिन्न शाखा
   2. लिंग
   3. अध्यापन अनुभव

उपरोक्त परिकल्पना का परीक्षण निम्न प्रकार से किया गया है व इस परिकल्पना को 2.अ 2.ब 2.क 2.ड 2.च. 2.छ 2.ज में विभाजित किया गया है।

शून्य परिकल्पना 2. (अ) का परीक्षण
शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा मे महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में संघर्ष समाधान इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नही होता है।

सारिणी कमांक 8: संघर्ष समाधान इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों का दृष्टिकोण

संघर्ष समाधान	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	725.66	सार्थक अंतर है
मध्यमान	44.13	36.80	75.49	40.63	1.96	2.58	3.83	2.44	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	10.47	9.27	8.38	8.97								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार संघर्ष समाधान इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापकों का अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 725.66 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः शांति शिक्षा के प्रति संघर्ष समाधान इस चर में सार्थक अंतर होता है ।

शून्य परिकल्पना 2. (ब) का परीक्षण
शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा अभियांत्रिक सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण के स्तर में अहिंसा इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 9: अहिंसा इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों का दृष्टिकोण

अहिंसा	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	345.04	सार्थक अंतर है
मध्यमान	29.06	26.12	48.97	25.12	1.96	2.58	3.70	2.51	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	7.21	6.74	5.82	5.46								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार अहिंसा इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापकों का अधिक सकारात्मक दृष्टिकोन है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 345.04 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः शांति शिक्षा के प्रति अहिंसा इस चर में सार्थक अंतर होता है ।

शून्य परिकल्पना 2. (क) का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा अभियांत्रिक सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता के स्तर में मानव अधिकार इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 10: मानव अधिकार इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों का दृष्टिकोण

मानव अधिकार	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	466.99	सार्थक अंतर है
मध्यमान	29.06	12.63	27.02	13.08	1.96	2.58	4.16	2.90	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	7.21	3.24	3.04	3.15								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार मानव अधिकार इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापकों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 466.99 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है ।

निष्कर्षः शांति शिक्षा के प्रति मानव अधिकार इस चर में सार्थक अंतर होता है।

शून्य परिकल्पना 2. ड का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा अभियांत्रिक सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण के स्तर में राष्ट्रीय एकात्मकता इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 11: राष्ट्रीय एकात्मकता इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय एकात्मता	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.01	0.01	0.05	0.01	431.31	सार्थक अंतर है
मध्यमान	24.27	19.95	40.29	21.19	1.96	2.58	2.93	3.40	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	7.27	6.09	7.73	5.80								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार राष्ट्रीय एकात्मकता इस चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापकों का अधिक सकारात्मक दृष्टिकोन है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 431.31 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः शांति शिक्षा के प्रति राष्ट्रीय एकात्मकता इस चर में सार्थक अंतर होता है।

शून्य परिकल्पना 2. च का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण के स्तर में कुल अर्थात सभी इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 12: कुल अर्थात सभी इस चर के प्रति महाविद्यालयों के अध्यापकों का दृष्टिकोण

कुल अर्थात सभी	समाजिक विज्ञान शाखा	चिकित्सा विज्ञान शाखा	शिक्षा शाखा	अभियांत्रिक शाखा	टी मूल्य का सारिणी मूल्य		लिंगभेद अनुसार टी मूल्य	अध्यापन अनुभव के अनुसार टी मूल्य	चरिता स्तर		एफ मूल्य	सार्थकता स्तर
नमुना	124	172	119	132	0.05	0.01	0.05	0.05	0.05	0.01	761.51	सार्थक अंतर है
मध्यमान	112.28	94.82	172.25	100.03	1.96	2.58	2.41	2.20	2.62	3.82		
प्रमाण विचलन	25.80	22.41	58.51	19.89								
स्वाधिनता मात्रा	547						547	547				

उपरोक्त सारिणी अनुसार कुल अर्थात सभी चर के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा महाविद्यालयों के अध्यापकों में से शिक्षा शाखा के अध्यापकों का अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है। स्त्री व पुरूष अध्यापकों में तथा अध्ययन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त सारिणी में एफ मूल्य 761.51 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः शांति शिक्षा के प्रति कुल अर्थात सभी इस चर में सार्थक अंतर होता है।

शून्य परिकल्पना 2. छ का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा, अभियांत्रिक, सामाजिक विज्ञान तथा चिकीत्सा विज्ञान शाखा के महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण के स्तर में लिंगभेद इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 13: लिंग भेद के अनुसार महाविद्यालयों के अध्यापकों का षांति षिक्षा के प्रति दृष्टिकोण

लिंग	नमुना	मध्यमान	प्रा.विचलन	स्वा. मात्रा	सारिणी मूल्य		टी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
स्त्री	318	120.81	49.26	547	0.05	0.01	3.41	0.01	अस्वीकार
पुरूष	229	111.93	37.35		1.96	2.58			

सारिणी अनुसार प्राप्त 'टी' की कींमत 3.41 है। जो कि सारणी मूल्य से अधिक है। अतः सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः लिंग भेद के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर होता है।

शून्य परिकल्पना 2. ज का परीक्षण

शांति शिक्षा के प्रति शिक्षा अभियांत्रिक सामाजिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान शाखा महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण के स्तर में अध्यापन अनुभव इस चर के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारिणी कमांक 14: अध्यापन अनुभव के अनुसार महाविद्यालयों के अध्यापकों का षांति षिक्षा के प्रति दृष्टिकोण

अध्यापन अनुभव	न्यादर्श	मध्यमान	प्रा.विचलन	स्वा. मात्रा	सारिणी मूल्य		टी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
10 साल से कम	413	114.59	43.04	547	0.05	0.01	2.15	0.05	अस्वीकार
10 साल से अधिक	134	124.84	49.35		1.96	2.58			

सारिणी अनुसार प्राप्त 'टी' की कींमत 2.15 है। जो कि सारणी मूल्य से अधिक है। अतः सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है।

निष्कर्षः अध्यापन अनुभव के अनुसार शांति शिक्षा के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

परिणाम

1. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता में विभाग अनुसार शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यापक शांति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है।
2. लिंगभेद के अनुसार स्त्री अध्यापक व पुरूष अध्यापकों की जागरूकता में शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है।
3. अध्यापन अनुभव के अनुसार अध्यापकों की जागरूकता में शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है।
4. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण में विभाग अनुसार शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यापक शांति शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है।
5. लिंगभेद के अनुसार स्त्री अध्यापक व पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है।
6. अध्यापन अनुभव के अनुसार अध्यापकों के दृष्टिकोण में शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है।

परिणामों की विवेचना तथा अध्ययन के निहितार्थ

शांति शिक्षा यह विषय शिक्षा शाखा से जुडा होने के कारण शिक्षा शाखा के अध्यापकों में शांति शिक्षा के प्रति जागरूकता का प्रमाण अधिक है। स्त्रीयों में सहनशीलता, भावुकता तथा सामंजस्य अधिक होने के कारण स्त्री अध्यापिकाओं की जागरूकता का प्रमाण अधिक पाया गया है। उसी के साथ ही अनुसंधानकर्ता के अनुसार अध्यापन अनुभव जितना अधिक होगा उतना ही हमें विषय के प्रति उतनी अधिक जानकारी होती है। इसी कारण से 10 साल से अधिक अध्यापन अनुभव प्राप्त अध्यापकों की जागरूकता का प्रमाण सबसे अधिक है। कारण अधिक समय होने के कारण वे अपने स्वभाव में अनुभव के कारण ही शांति को अपनाने लगते है। इसी प्रकार एफ मूल्य के अनुसार हर शाखा के अध्यापकों में शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है कारण सिर्फ शिक्षा शाखा ही शांति शिक्षा इस विषय से अवगत है दुसरी शाखा के अध्यापकों को इस विषय की जानकारी नही है जिस कारण से यह अंतर दिखाई देता है। शिक्षा शाखा के अध्यापक अधिक जागरूक है कारण इस विषय से जुडें सभी विषयों का अधिक ज्ञान होता है जिस कारण से जागरूकता का प्रमाण में सबसे अधिक है। अनुसंधानकर्ता के अनुसार इन सब का कारण यह है कि संघर्ष समाधान इस चर के प्रति सभी अध्यापकों का सकारात्मक दृष्टिकोन है परंतु शिक्षा के अध्यापकों को शांति शिक्षा का ज्ञान अधिक होने के कारण से शिक्षा शाखा के अध्यापकों का दृष्टिकोण इस विषय के प्रति सबसे अधिक सकारात्मक है। इस के साथ ही 10 साल से कम अध्यापन अनुभव प्राप्त अध्यापकों में संघर्ष समाधान इस चर के प्रति अधिक सकारात्मकता पाई गई है। कारण आज मिडीया के कारण सभी लोगों मे हर विषय के प्रति जागरूकता का प्रमाण अधिक बढ गया है। जिस कारण ही सभी विषयों का ज्ञान होने के कारण से ही उनके दृष्टिकोण मे अधिक सकारात्मकता पाई गई है। स्त्रीयों के स्वभाव में ही शांति व सहयोग का भाव होता है जिस कारण ही स्त्री अध्यापिकाओं में शांति शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया है।

संदर्भ

1. वोहरा, (2009), शोध प्रविधी नई दिल्लीः आमेगा पब्लिकेशन।
2. लोकमान्य तिलक टिचर ट्रेनिंग कॉलेज, (2010), अंतरराष्ट्रीय सभाः उदयपुर राजस्थान।

3. शर्मा, (2011), शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया मेरठः आर लाल बुक डिपो।
4. सुलेखा, बरवे, संजीवनी, (2005), एम.एड.संशोधक मार्गदर्शिका भाग 1 व य.च.म.मु.वि.नाशिक।
5. पंडीत, (1997), शिक्षणातील संशोधन संकल्पनात्मक परिचय पुणेः नित्य नुतन प्रकाशन।
6. जगताप, (2006–2008), शिक्षणातील नवप्रवाह व नवप्रवर्तने, पुणेः नित्य नुतन प्रकाशन।
7. वाद्य, (2010–2011), धनंजय बी.एड. प्रश्नोत्तर नोटस् सांगलीः धनंजय प्रकाशन।